THE WORLD BANK

e-संवाद

SCERT पटना द्वारा विकसित एक मासिक पत्र

October 2019 Vol. 02 No. 5

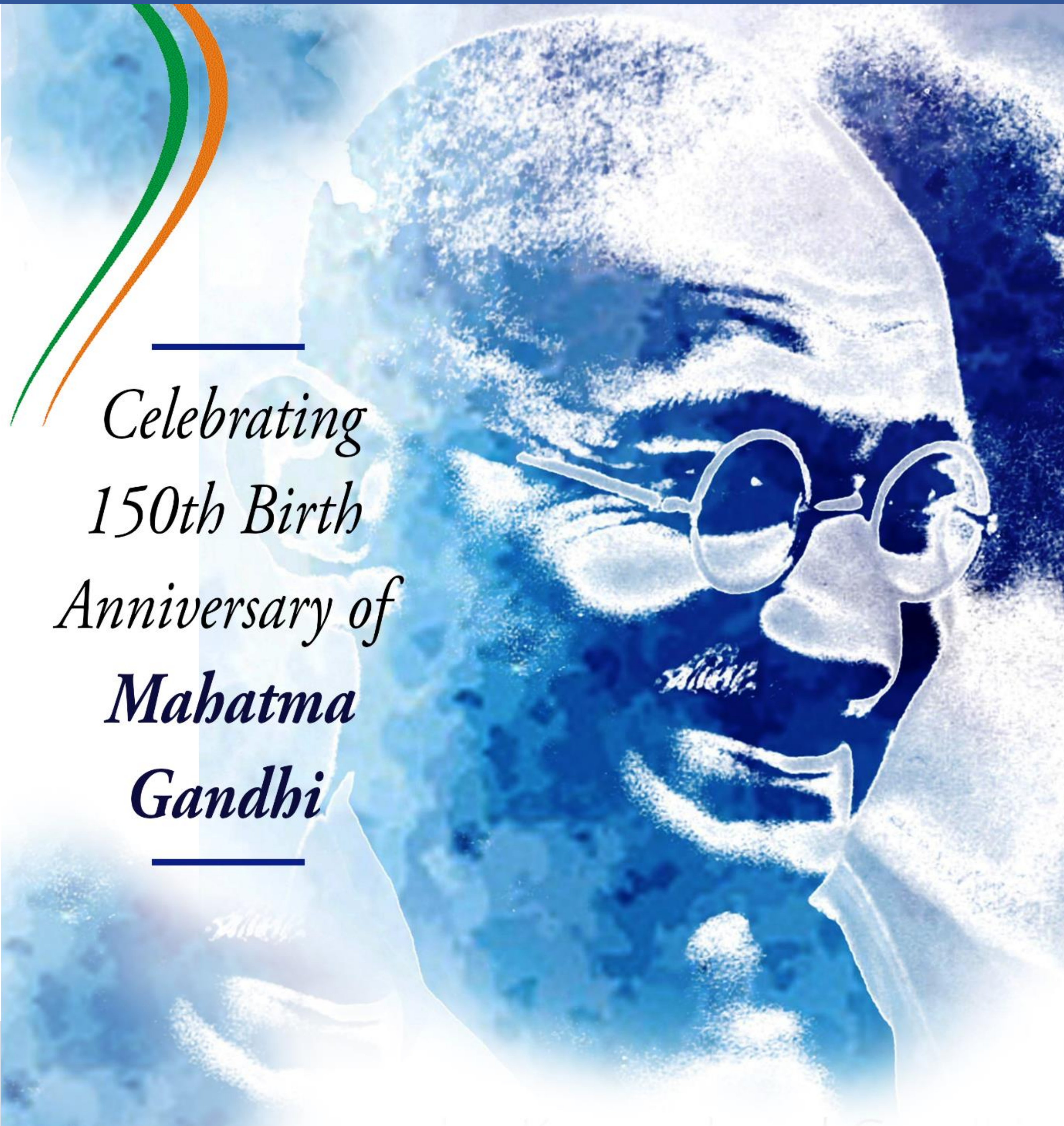

Celebrating 150th Birth Anniversary of Mahatma Gandhi

विषय सूची

1. अपनी बात
2. Let's work together
3. गाँधी, एक महान शिक्षक!
4. रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम...
5. गाँधी और बुनियादी शिक्षा
6. गांधीजी की नई तालीम
7. जब मैंने गाँधी जी के दर्शन किये
8. बाल विवाह और आरंभिक वैवाहिक जीवन
9. Teaching Engliish as Second Language – *First stage*
10. सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा *(चौथा भाग)*
11. SCERT-ISA द्वारा अगस्त–सितम्बर 2019 की गतिविधियाँ
12. परख
13. सामंजस्य
14. हमें रक्त के बारे में कैसे पता चला?
15. Maths Activity
16. Science Activity
17. कविता

परामर्श दाता

विनोद कुमार सिंह (भा0प्र0से0)
निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

विनय पटनायक, टीम लीडर,
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0

संपादक मंडल

डा0 इम्तयाज आलम
विभागाध्यक्ष, श्रव्य दृश्य विभाग,
एस0सी0ई0आर0टी0

तेजनारायण प्रसाद
विभागाध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित
शिक्षा विभाग, एस0सी0ई0आर0टी0

नलिन कुमार मिश्रा
सी0पी0डी0 लीड,
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0

ग्राफिक्स डिजायन

सव्यसाची पांजा
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0

निदेशक की कलम से – शुभेच्छा

प्रिय मित्रों,

पिछले महीने का e संवाद आप सभी पढ़े होंगे। इस बार के e संवाद का अंक गांधी जी के विचारों को समाहित कर आपके समक्ष रखा गया है।

गांधी जी के 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में देश में कई समारोह का आयोजन किया जा रहा है। आप भी गांधी कथा वाचन के साथ जयंती के अवसर पर अपने विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित कर बच्चों को गांधी जी के विचारों से अवश्य अवगत करा रहे होंगें।

महात्मा गाँधी बीसवीं सदी के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं; जिनकी अप्रत्यक्ष उपस्थिति उनकी मृत्यु के साठ वर्ष बाद भी पूरे देश पर देखी जा सकती है। उन्होंने भारत की कल्पना की और उसके लिए कठिन संघर्ष किया। स्वाधीनता से उनका अर्थ केवल ब्रिटिश राज से मुक्ति का नहीं था बल्कि वह गरीबी, निरक्षरता और अस्पृश्यता जैसी बुराइयों से मुक्ति का सपना देखते थे। वह चाहते थे कि देश के सारे नागरिक समान रूप से आज़ादी और समृद्धि का सुख पा सकें।

उनके बहुत–से परिवर्तनकारी विचार, जिन्हें उस समय, असंभव कह परे कर दिया गया था, आज न केवल स्वीकार किये जा रहे हैं बल्कि अपनाए भी जा रहे हैं। आज की पीढ़ी के सामने यह स्पष्ट हो रहा है कि गाँधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे। गाँधीजी के विचार इक्कीसवीं सदी के लिए भी सार्थक और उपयोगी हैं।

गाँधी जी अपने पाठकों से कहते थे कि सत्य की अपनी खोज में मैंने बहुत से विचारों को छोड़ा है और अनेक नई बातें मैं सीखा भी हूँ। उमर में भले मैं बूढ़ा हो गया हूँ, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि मेरा आन्तरिक विकास होना बन्द हो गया है या देह छूटने के बाद मेरा विकास बन्द हो जायेगा।

मुझे आशा और पूर्ण विश्वास है कि आप सभी अपने शिक्षण अभ्यासों को उत्तरोत्तर विकास करने में सफल हो रहे होंगे। आप सभी के प्रयास से e संवाद राज्य के सुदूर क्षेत्रों में भी साधक शिक्षकों को हमेशा प्राप्त होता रहेगा और लाभान्वित होते रहेंगे।

आप अपने विचार से हमें आप जरूर अवगत कराएंगे।

आपका

विनोद कुमार सिंह
निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

अपनी बात

एप्प कॉर्नर

Khan Academy के द्वारा सभी विषय की जानकारी के लिए निर्माण की गई मोबाइल एप्प हैं Khan Academy एप्प। एप्प को डाउनलोड कर के आप गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र और वित्त, कला और मानवता, कंप्यूटिंग आदि विषयों की जानकारी वीडियो एवं टेक्स्ट के जरिये ले सकते है। यदि आप किसी टॉपिक को ऑफलाइन मोड में पढ़ना चाहते है तो उसे बुकमार्क कर सकते है डाउनलोड कर सकते है।

शिवेन्द्र प्रकाश सुमन
सॉफ्टवेयर डेवलपर
आई0एस0ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0
पटना

GET IT ON Google Play

Link: https://cutt.ly/Her7IJL

प्रिय शिक्षक साथियों,

e संवाद के नए अंक के साथ पुनः उपस्थित हूँ।

यह महीना गांधी के 150वीं वर्षगांठ का महीना है। पूरा विश्व गांधी को याद कर रहा है। आप भी अपने बच्चों के साथ विद्यालय में गांधी की चर्चा एवं उनके विचार पर कार्यक्रम एवं संवाद आयोजित कर रहे होंगे।

इस अंक को हमने गांधी जी के विचारों पर ही केंद्रित रखा है। नियमित स्तंभ के साथ गांधी जी के विचारों को शामिल करने की कोशिश की है। गांधीजी कहा करते थे कि आचार के बिना पूरा बौद्धिक ज्ञान उस निर्जीव देह की तरह है जिसे मसाला भर पर सुरक्षित रखा जाता है। वह देखने में अच्छा लग सकता है किंतु उसमें प्रेरणा देने की शक्ति नहीं होती है।

गांधी जी ने शिक्षा को निरी साहित्यिक बना देने से परहेज करने को कहा। गांधीजी कहते थे कि हमारा अधिकांश समय अपनी रोजी कमाने में लगता है, इसलिए हमारे बच्चों को बचपन से ही इस प्रकार के परिश्रम का गौरव सिखाना चाहिए। हमारे बालकों की पढ़ाई ऐसी नहीं होनी चाहिए, जिससे वह मेहनत का तिरस्कार करने लगे । कोई कारण नहीं कि क्यों एक किसान का बेटा किसी स्कूल में जाने के बाद खेती के मजदूर के रूप में आज कल की तरह निकम्मा बन जाए। यह अफसोस की बात है कि हमारी पाठशालाओं में लड़के शारीरिक श्रम को तिरस्कार की दृष्टि से चाहे ना देखते हो,पर नापसंदगी की नजर से तो जरूर देखते हैं।

मैं भारत के लिए निशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत को दृढ़ता पूर्वक मानता हूँ। मैं यह भी मानता हूं कि इस लक्ष्य को पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है कि हम बच्चों को कोई उपयोगी उद्योग सिखाएं । और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करें।

जरूरत है कि हम गाँधी को समझें एवं अपने बच्चों को बताएँ। गाँधी के विचारों को जीवन में जगह दे पाएँ तो बेहतर समाज की नींव रख पाएँगे।

नियमित स्तंभों के साथ–साथ इस अंक में विभिन्न लेखकों के गांधी के शिक्षा से संबंधित विचारों को रखा गया है आशा है यह अंक आपको अच्छा लगेगा गांधी को समझने में एक दिशा भी देगा।

सधन्यवाद

आपके विचार और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

e संवाद परिवार

Let’s work together

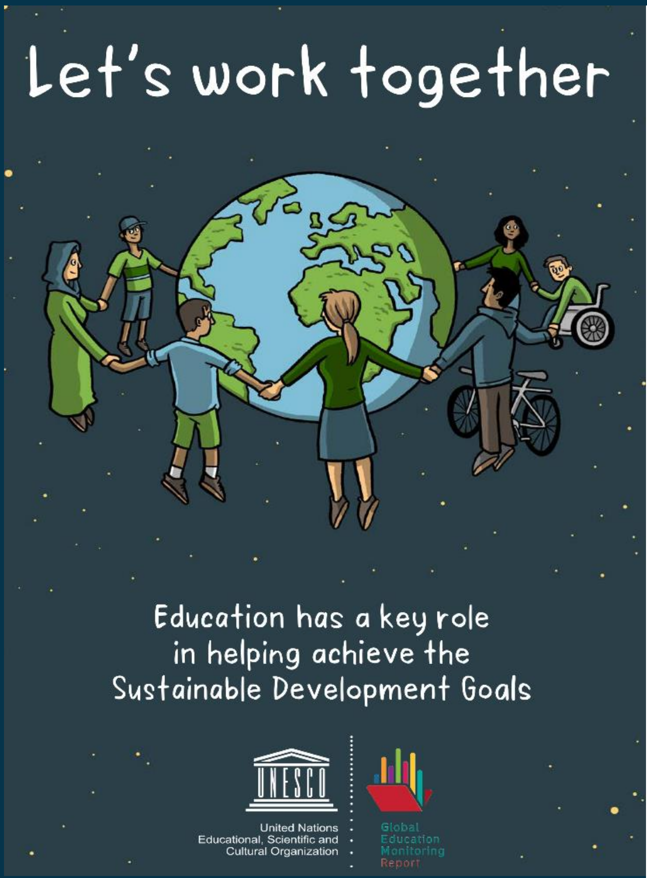

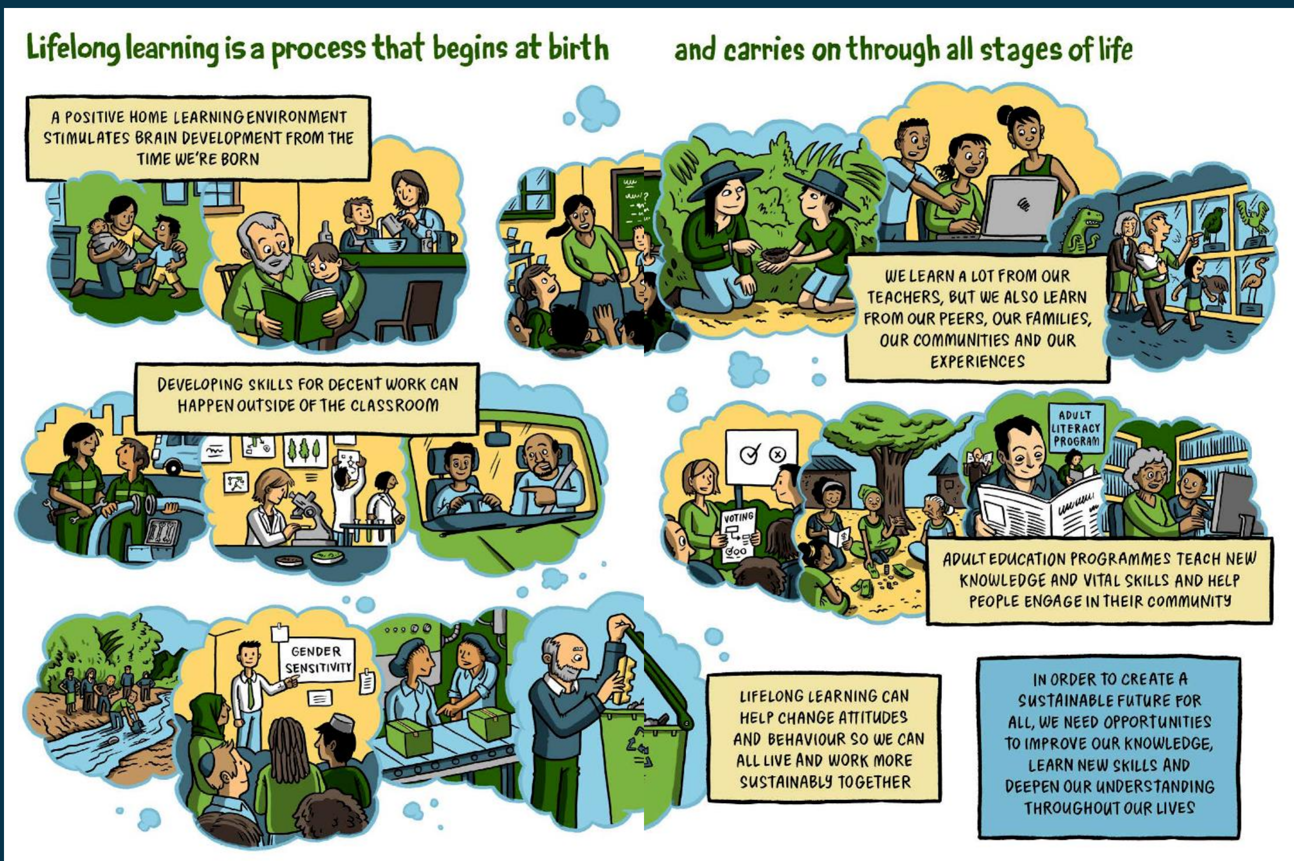

Courtesy: UNESCO

गाँधी, एक महान शिक्षक!

महात्मा गांधी भारत के एक महान प्रतीक है। भारत का नाम जो कोई जैसे ही लेता है, वैसे ही महात्मा गांधी की तस्वीर उसके मन मस्तिष्क में उभर आती है। गांधी एक आंधी नहीं था बल्कि एक शीतल झीरझोर बहती बयार है। जो तब तक बहती रहेगी जब तक प्रजातांत्रिक हिंदुस्तान का अस्तित्व बरकरार रहेगा। गांधी दर्शन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा में प्रारंभिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, उच्च शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शिक्षक शिक्षा तमाम तरह की शिक्षाओं का समावेश है। गांधी ने संपूर्ण भारतीय क्षेत्रों को अपने कार्यों और विचारों से बहुत दूर दूर तक प्रभावित किया है। गांधी ने भारतीय शिक्षा की बुनियाद को यानि नींव को मजबूत करने का ऐसा प्रयास किया है कि बुनियादी शिक्षा का उदाहरण संपूर्ण विश्व में मारिया मांटेसरी आदि पाश्चात्य शिक्षा शास्त्रियों से भी आगे का कदम है। बुनियादी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा जिसमें बालक का सर्वांगीण विकास, स्वावलंबन, नैतिक शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, शारीरिक श्रम, लोक व्यवहार, धार्मिक शिक्षा, राष्ट्रीय एकता, विश्व बंधुत्व, बोलना नहीं करना, सादा जीवन उच्च विचार, समय का मोल, तमाम तरह की प्राचीन और अर्वाचीन आधुनिक शिक्षा का समावेश है। चूंकि गांधी महज राजनीतिक नेता नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति एवं विश्व संस्कृति के महान अध्येयता भी थे। उन्होंने न केवल भागवद् गीता का अध्ययन किया बल्कि कुरान और बाइबल जैसे अध्यात्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। उनकी शिक्षा में प्रकृति के वात्सल्य और प्रेम की अटूट साधना है। गांधी संपूर्ण भारत के मानचित्र पर संपूर्ण भारतीय समाज में रक्त और वायु की तरह व्याप्त है। गांधी जी की वाकपटुता का उदाहरण अद्वितीय है। गांधी चर्च भी जाते थे, मस्जिद गुरुद्वारे और मंदिर भी जाते थे। एक दफा किसी ने उनसे कहा बाबा आप तो बाइबल भी पढ़ते हैं , चर्च भी जाते हैं इसाई क्यों नहीं हो जाते हैं? तो उनका बड़ा शानदार जवाब था मैं तो ईसाई भी हूं, हिंदू और मुसलमान भी, बौद्ध और पारसी भी। इसाई ना रहूं तब ना हो जाऊं। इतना ही नहीं महात्मा गांधी जैसा निडर व्यक्ति शायद दुनियां के इतिहास में ढूंढे न मिले। एक दफा किसी अंग्रेज अफसर महात्मा गांधी की हत्या का षडयंत्र रचा। इसकी भनक गांधी को लग गई।गांधी जी संध्या के झोल–पोल में अपनी लकुटिया लिए अकेले उस अंग्रेज अफसर के आवास पर पहुंच गए और बात–बात में अंग्रेज अफसर से कहा मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि आप मेरी हत्या करा देना चाहते हैं। लीजिए, मैं अकेले आपके पास हाजिर हूं। आपको कोई कष्ट ना हो। मेरी हत्या करा दीजिए। अंग्रेज अफसर बुरी तरह से लज्जित हुआ और उनके चरणों पर गिर पड़ा। ऐसे सैकड़ों उदाहरण है जो शिक्षा के मारक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। गांधी की आवाज,रहन–सहन,व्यक्तित्व,वक्तव्य, कार्य सब कुछ ऐसे थे जो पूरी तरह से भारतीय इतिहास के योद्धाओं के तत्वों से लबरेज है। गांधी का समय, अहिंसा, सत्याग्रह सब कुछ ऐसा था जो आज सारी दुनिया इनके कार्यों का अनुसरण करती है। तभी तो आज सौ डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में गांधी दर्शन की पढ़ाई अलग से होती है। गांधी का स्पष्ट कहना था कि तुम जो बदलाव दूसरे में देखना चाहते हो, वह बदलाव पहले खुद अपने लाओ। गांधी के ऐसे ऐसे आप्त वाक्य पाठकों और श्रोताओं को सहसा भावविह्वल कर देते हैं और महात्मा गांधी को ईसा मसीह, महात्मा बुद्ध, रामकृष्ण परमहंस की श्रेणी में ही नहीं खड़ा करते बल्कि करो या मरो का नारा देने वाले एक क्रांतिकारी के रूप में भी खड़ा करते हैं। महात्मा गांधी ने 1942 के आंदोलन में स्पष्ट कहा कि आततायी अंग्रेजों को खदेड़ने के लिए "डू ओर डाई" "करो या मरो" के रूप में भारत की बहादुर जनता संघर्ष करेगी। बुनियादी शिक्षा, बुनियादी विद्यालय, सूत काटना, खेती करना, कला को प्रोत्साहन देना, पशु पालन करना, कमा कर पढ़ना, प्रकृति से प्रेम करना, शिक्षक का नैतिक होना,ऐसा शिक्षक जो समाज का पथ प्रदर्शन कर सके, ऐसा शिक्षक जो छात्रों में देशभक्ति के बीज बो सके, ऐसा शिक्षक जो विनम्रता का साक्षात रुप हो, ऐसा शिक्षक जो खुद स्वावलंबी हो और किशोर छात्रों को कमा कर पढ़ने के योग्य बना सके। ऐसा शिक्षक जो छात्र के आंतरिक गुणों को उजागर कर सके। ऐसा शिक्षक जो नए भारत का निर्माण कर सके। ऐसा शिक्षक जो भारतीय नीति,रीति, संस्कृति, सादगी त्याग की प्रतिमूर्ति होः ऐसा शिक्षक जो क्रोध, काम, मोह, लोभ, संग्रह को अंकुश में रखे। उन्होंने तथ्य को कार्य रूप में परिणत कर दिया तब दर्शन किया। उनकी वाणी में सत्य और अहिंसा एवं ब्रह्मचर्य की ऐसी दिव्य

ताकत थी जो संपूर्ण संसार को हिलाकर रखने की क्षमता रखती है। आज यू0एस0ए0 में मैंने देखा कि इण्टरमीडिएट का छात्र अपने स्वावलंबन के लिए पढाई के क्रम में फोरव्हीकल चलाने की कला सीखता है। क्योंकि सैद्धांतिक पढाई से अगर रोजगार नहीं पा सके तो ड्राइविंग करके ही अपनी रोजी रोटी कमा सके। इस बात का तजुर्बा भारत के लिए गांधी ने पहले ही बुनियादी शिक्षा में डाल दी थी।

शिक्षक शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें पूरे विकास की क्षमता सन्निहित है। शिक्षक समाज का ही नहीं राष्ट्र का हीरो है। राष्ट्र निर्माता तो है ही आज दुनिया का कोई देश आगे गया है तो अपने महान शिक्षकों के योगदान के कारण। किसी भी राष्ट्र के लिए महान शिक्षकों को तैयार करना एक राष्ट्रीय गौरव है। देश की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को शिक्षक के रूप में लाना राष्ट्र निर्माण का अभिन्न अंग होना आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा के संस्थानों को श्रेष्ठ शैक्षिक संस्था रूप में विकसित किया जाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो। तभी महात्मा गांधी की आत्मा को शांति मिल सकती है। और गांधी के सपनों के भारत का स्वप्न साकार हो सकता है।एक ऐसा शिक्षक जाति मजहब, गोरा काला, ऊँच–नीच से ऊपर का व्यक्तित्व हो जिसमें समानता के गुण भरे हों। रग–रग में प्रजातांत्रिक मूल्यों का समावेश हो। शिक्षक शिक्षा का केंद्र स्वावलंबन का मुख्यालय हो। शिक्षक शिक्षा केंद्र में महज वैसे ही किशोर युवक युवतियों का प्रवेश हो जो पूरी तरह से शिक्षक बनने की मानसिकता लेकर प्रवेश ले सकें,न कि बेमन का टीका कनपट्टी में की तरह।

शिक्षक शिक्षा के केन्द्र एक ऐसे संस्थान के रूप में विकसित हो, जहां न केवल शिक्षक निर्माण यानि शिक्षा की पढ़ाई हो बल्कि विषय विषेष के भी जबरदस्त प्रायोगिक केंद्र के रूप में विकसित हो।

महात्मा गांधी के यह कथन शिक्षा के मूल तत्व हैं–पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए, पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है लेकिन लालच पूरी करने के लिए नहीं, सात सामाजिक पाप कर्म है।

1. सिद्धांतों के बिना राजनीति
2. परिश्रम के बिना धन
3. विवेक के बिना सुख
4. चरित्र के बिना ज्ञान
5. नैतिकता के बिना व्यापार
6. मानवता के बिना विज्ञान

बकौल गांधीजी शिक्षा से मेरा तात्पर्य, शरीरिक, मस्तिष्क और आत्मा तीनों का विकास है, यह हमें अंधकार से उजाले की ओर ले जाती है। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है।

महान गुरु गांधी के कुछ अन्य विचार

दहेज की शर्त रखना शिक्षा, देश और स्त्री जाति का अपमान है।

अपनी गलती को स्वीकारना झाडू लगाने के समान है, जो मन को साफ तथा चमकदार बना देता है। जैसा सोचोगे, वैसा ही बनोगे, जब मुझे विश्वास होगा कि मैं कर सकता हूं, तो मुझमें वह करने की योग्यता भी आ जाएगी।

सत्य तथा न्याय परायणता से ऊंचा कोई धर्म नहीं है।

वर्धा स्कीम ऑफ एजुकेशन यानि बुनियादी शिक्षा। शिक्षित होने का माध्यम शिक्षा। आत्मनिर्भरता भी शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा का आधार, प्रकृतिवादी, शिक्षार्थी को प्रकृति के माध्यम से सीखने की राय रूसो ने भी दी थी। आदर्शवादी यानी सत्य,अहिंसा तथा सर्वोदय के सिद्धांत पर आधारित शिक्षा, प्रयोजनवादी शिक्षा यानि आत्मनिर्भरता शिक्षा का साधन है। 7 से 14 वर्ष की आयु तक की शिक्षा अनिवार्य एवं निःशुल्क हो ताकि बुनियाद मजबूत हो और भारतीय पूर्णतः शिक्षित हो सके। शिक्षा का मूल उद्देश्य रटना नहीं समझना है।अतएव, शिक्षा मातृभाषा में ही हो। शिक्षा में हस्तकला एवं रुचि के आने से रोजगारपरकता आएगी। शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य है अच्छे नागरिक पैदा करना ताकि देश अच्छा बन सके। स्त्री शिक्षा पर विशेष बल ताकि स्त्री पूरे परिवार को शिक्षित कर सके। अपना काम स्वयं करना देवत्व का दूसरा रूप साफ–सफाई है यही कहना था गांधी का।

विद्या– विनम्रता –पात्रता –धन प्राप्ति– धर्म–कर्म– सुख

गांधी जी ने कस्तूरबा गांधी को भी स्वयं पढाया। बैरिस्टरी की पढाई इंग्लैंड जाकर की। पूरे देश का अध्ययन किया, निडर इतना कि भगवान के सिवा दूसरों से कभी नहीं डरे।सत्य, अहिंसा, अस्तेय, सादगी, सेवा उनके हथियार थे। खादी स्वयं चरखा पर बिनते काटते और वही पहनते। अल्लाह–ईश्वर तेरे नाम सबको सम्मति दे भगवान। वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे। एक संपूर्ण भारतीय आत्मा राष्ट्रपिता। महान शिक्षक महात्मा गांधी। कल के राम–रहीम–करीम–नानक–नामवर। कोटिशः नमन सच्चे गुरू।

डॉ0 सी रा प्रसाद, प्राचार्य,
डायट भोजपुर

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम...

यह भजन की पंक्ति कानों में आते ही हमारे सामने है ऐसे महापुरुष की छवि आती है, एक ऐसी अमर आत्मा का एहसास होता है, जो हम देशवासियों के हाथों में तिरंगा समर्पित कर रहे हैं। यह अमर आत्मा पुरुष कोई और नहीं हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्हें कभी मोहनदास करमचंद गांधी कहा गया बापू कहा गया, तो कभी गांधीजी वैसे तो हमारे देश में सभी महापुरुषों ने देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान परंतु गांधीजी का सामान्य लोगों, दलितों, रंग भेद, सत्य, अहिंसा का जो मंत्र था वह आम लोगों की भावना से उनके विचार लोगों के मन मस्तिष्क पर छप गए थे। सिर्फ हाथ में एक लाठी लेकर धोती कुर्ता में गांधी जी ने जिस साहस के साथ अंग्रेजी हुकूमत और सामाजिक बुराई के ऊपर विजय का पताका लहराया, वह अतुलनीय है, जिस परिस्थिति में गांधीजी ने भारत को लोकतांत्रिक देश बनाया वह सराहनीय है। मोहम्मद अली जिन्ना की पाकिस्तान की ज़िद, समाज में रंगभेद की समस्या, जातिवाद की समस्या,विकास की समस्या, विश्व में धर्म वाद, भारत और काले गोरे की समस्या ने पूरे देश की समस्या बना दी थी। इसके अलावा चंपारण में नील की खेती की समस्या, हिंदू मुसलमान का फैलता जहर भारत की आजादी को जैसे पनपने ही नहीं दे रहा था। इसके अलावा भाषा की समस्या, अलग–अलग राज्य समस्या, अलग–अलग समुदाय,अलग–अलग राज्यों की मांग की समस्या थी। इन सभी विकट परिस्थितियों में गांधीजी एक सूर्य की तरह सभी अंधकारों की समस्या को हटाकर उजाला की।लोगों ने 15 अगस्त 1947 को नए भारत में सांस ली।

गांधीजी का योगदान सिर्फ भारत की स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं रही बल्कि उनके विचार हमारे शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका योगदान सराहनीय रहा। बुनियादी विद्यालय और आत्मनिर्भरता उनकी सफलता की दो चाबियां थी। खुद से कपड़ा बुनकर पहनना उनका स्वाभिमान था।

आज हम गांधीजी की कहानी विचार और पराक्रम हम किताबों में पढ़ते हैं पर वास्तविकता तो कुछ और है। आज के छात्रों में जिस तरह नैतिकता का ह्रास, मानवता का पतन हो रहा है शिक्षा के क्षेत्र में वह वास्तव में निंदनीय है आज के बच्चों में त्याग, बलिदान और साहस बिल्कुल नहीं के बराबर है। यह बड़ा ही सोचनीय है। कक्षा के अलावा ट्यूशन, कोचिंग के जरिए भी बच्चों के ज्ञान व्यवहार में उन्नति नहीं हो रही है। बड़ों की इज्जत करना, उनका सामाजिक होना,परिवारिक होना, इन सब चीजों की कमी पाई जा रही है वहीं सारी गुणों से दूर होते जा रहे हैं. बच्चों की किताबें, सिर्फ आगे कक्षा में जाने का एक पैमाना है। ऐसे वक्त में जरूरत है कि गांधीजी के विचारों को, सोच को, बच्चों के साथ कक्षा में, विद्यालय में, और जीवन में, आत्मसात किए जाएं. गांधीजी का त्याग, प्रेम, साहस, सत्यता, अहिंसा का बच्चों के जीवन से जोड़ा जाए. कक्षा में एक नैतिक शास्त्र विषय की पढ़ाई हो, ताकि बच्चे का नैतिक मूल्य मजबूत हो और यह नैतिकता उन्हें विद्यालय के साथ–साथ जीवन के इम्तिहान में भी सफलता दिलाए। उस पुस्तक में महापुरुषों के त्याग, बलिदान और बच्चों से संबंधित अनुशासन, नैतिकता, साहस, प्रेम,त्याग का पाठ विषय हा।

सुनील कुमार - *प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक*
आर के के राजकीय बुनियादी विद्यालय
मालसलामी, पटना सिटी, पटना

गाँधी और बुनियादी शिक्षा

"एक शिक्षक जो बच्चों के साथ तादात्म्य बनाता है, घुल मिल जाता है, वह उन्हें सिखाने की बजाए उनसे कहीं ज्यादा सीखता है। जो अपने शिष्यों से कुछ नहीं सीखता है वह बेकार है। जब भी मैं किसी से बात करता हूँ उससे कुछ न कुछ सीखता हूँ। मैं उसे देने से ज्यादा उससे लेता हूँ। इस तरह एक सच्चा शिक्षक स्वयं को अपने शिष्य का शिष्य ही मानता है। अगर तुम इस भाव के साथ विद्यार्थियों को पढ़ाओगे, उनसे तुम्हें बहुत लाभ मिलेगा।"

आज दुनिया जिस दौर से गुजर रही है गांधीजी और उनके दर्शन की प्रासंगिकता सर्वाधिक बढ़ गई है। गांधीजी के मन में भविष्य को लेकर जो चिंता थी, उसका विद्रुप चेहरा आज दिखाई पड़ रहा है। आज 'सत्य' और 'अहिंसा' शब्द बेमानी हो गए तो शिक्षा मूल्यहीन और बेरोजगारीपरक हो गई। आधुनिक भौतिकवाद की बाहों में सबकुछ बौना। शायद इन परिस्थितियों का अंदाज़ा गांधीजी को था इसीलिए उनके शिक्षा–दर्शन में इन वर्तमान चुनौतियों एवं समस्याओं का समाधान दिखता है।

गांधीजी का मानना था कि शरीर, बुद्धि और हृद्य तीनों का उचित और संतुलित योगदान, शिक्षा को संपूर्णता और समग्रता प्रदान करता है। वे शिक्षा में नैतिक आग्रहों के समावेश और उसे बच्चों के चरित्र निर्माण का साधन बनाने के प्रबल पक्षधर थे। वे बनावटीपन और आडंबर विरोधी तो थे ही बच्चों की नैसर्गिक अच्छाई में विश्वास एवं चीज़ों को करके सीखने पर ज़ोर देते थे। वे अनुभवों की समग्रता और सीखने–सिखाने की सामाजिक और भावनात्मक महत्व से अवगत थे। उनका मानना था कि शिक्षा आत्मनिर्भर बनाने वाली और रोजगारोन्मुख होनी चाहिए।

भारतीय राजनीति में जब गाँधी का प्रवेश हुआ, छायावाद अपनी पराकाष्ठा पर था। तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था पर इसका विशेष असर और ज्ञान का किताबी होना गांधीजी को पसंद नहीं आया। फलतः विकल्प के तौर पर उन्होंने शिल्प–केंद्रित शिक्षा का प्रस्ताव किया। इसे ही औपचारिक तौर पर 'बर्धा की बुनियादी शिक्षा' के रूप में पेश किया गया। बुनियादी शिक्षा के तीन अहम बिन्दु थे–

- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- शिक्षा हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य पर केंद्रित हो।
- अन्य सभी योग्यताओं और गुणों का विकास जहाँ तक सम्भव हो, बच्चों के परिवेश को ध्यान में रखते हुए उनके रुचि की हस्तकला से सम्बन्धित हो।

गाँधी बुनियादी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन और शांत सामाजिक क्रांति का एक प्रमुख आधार मानते थे। आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता को ही उन्होंने मनुष्य के पूर्ण विकास का आधार माना। उनका मत था कि भारत जैसे गरीब देश में शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ कुछ धनोपार्जन भी कर लेना चाहिए जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। वे शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे। इसीलिये वे सभी बच्चों के निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा के पक्षधर थे।

गाँधी के सिद्धांतों के मूल में बच्चों की प्रतिभा का विकास और वृद्धि थी। उन्होंने उद्देश्यपूर्ण और उत्पादक शारीरिक गतिविधियों का बच्चों पर होने वाले असर को देखा था। वे बच्चों की सृजनात्मक और आत्म–अभिव्यक्ति की आवश्यकताओं को बारीकी से समझते भी थे। बचपन के बारे में उनके सरोकार का केंद्र बच्चों का मूल स्वभाव था कि बच्चा कैसे सीखता है और उसकी बुनियादी आवश्यकताएं क्या हैं? यह सभी मिलकर आज की रचनावादी शिक्षा का निर्माण करते हैं। दरअसल, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में सीखने के जिस रचनावाद, बच्चों के मातृभाषा का सम्मान, उनकी अभिव्यक्ति की आज़ादी, कला के प्रति बच्चों के नैसर्गिक सम्मोहन के रचनावादी उपयोग आदि की वकालत की गई है, जिसका स्रोत कहीं न कहीं गाँधी दर्शन ही है।

गाँधी की बुनियादी शिक्षा का दर्शन एवं प्रक्रिया केवल भारतवर्ष ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को एक नयी दिशा देने में सक्षम था। परन्तु दुर्भाग्यवश इस सर्वोत्तम कल्याणकारी शिक्षा–प्रणाली का राष्ट्रीय स्तर पर भी समुचित उपयोग नहीं हो पाया, जिसके फलस्वरूप आजतक यह देश गांधीजी के सपनों के अनुरूप सार्थक और सही स्वराज प्राप्त करने में असमर्थ रहा। आज की मशीनी शिक्षा इंसान को रोबोट बना रही है जिसके पास हुनर तो है लेकिन संवेदना, प्यार, दया आदि मानवीय गुण उसके शब्दकोश में है ही नहीं। महंगी शिक्षा व्यवस्था आम आदमी की पहुँच से दूर है। देश अकुशल कामगारों का केंद्र बन रहा है, बेरोजगारी बेतहाशा बढ़ रही है। ये परिस्थितियाँ नफरत और हिंसा नहीं बढ़ाएँगी तो क्या करेंगी? आज गाँधी की बुनियादी शिक्षा एक बार फिर प्रासंगिक और वर्तमान चुनौतियों के समाधान के रूप में दिख रही है। हम विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के साथ गाँधी की 150 वीं जयंती मना रहे हैं, विद्यालयों में गाँधी कथावाचन शुरू हो चुका है, बस जरूरत है एक कदम और बढ़ने की, अब बच्चों के एक हाथ में कम्प्युटर का माउस हो तो दूसरा किसी शिल्प–कला (कौशल विकास) पर। गाँधी की 150 वीं जयंती पर कृतज्ञ राष्ट्र की श्रद्धांजलि– 'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाने रे ...।'

डॉ सुमन कुमार सिह *(शिक्षक),*
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय,
कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सीवान

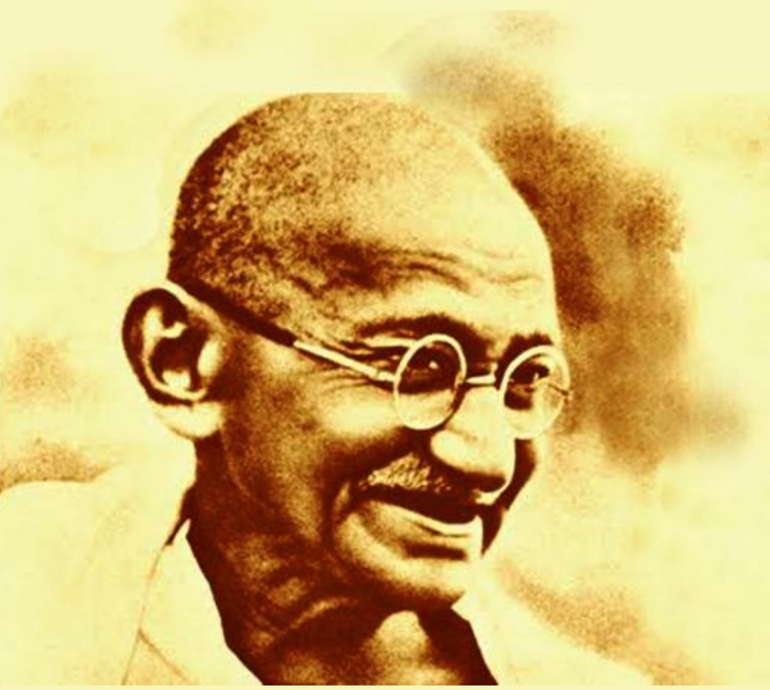

गांधीजी की नई तालीम

उत्तम शिक्षण की कसौटी यही है कि युवकों में अपना भावी जीवन विवेकपूर्वक चुनने की क्षमता उत्पन्न हो। विनोबाजी मानते थे कि 15 अगस्त 1947 को जैसे झंडा बदला वैसे ही शिक्षा व्यवस्था भी तुरंत बदलनी चाहिए। इतिहास में गांधीजी से बड़े शिक्षक और शिक्षाशास्त्री का कोई उदाहरण नहीं मिलेगा। महात्मा गांधी ने जीवनभर शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किए। उन्होंने स्वयं के द्वारा प्रवर्तित शिक्षा को 'नयी तालीम' नाम दिया। गांधीजी ने सन् 1937 में देश के सामने नयी तालीम की रूपरेखा प्रस्तुत की। गांधीजी का यह स्पष्ट मानना था कि किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। अपनी शिक्षा में गांधीजी ने आत्मा के विकास का आधार सत्य, सामाजिक व्यवस्था का आधार अहिंसा और आर्थिक ढांचे का आधार अपरिग्रह माना। कर्म केंद्रित शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ ही उसे एक समाजोपयोगी प्राणी भी बनाती है।

शिक्षा यदि नैतिकता नहीं सिखाती तो वह शिक्षा ही नहीं है। गांधीजी ने यह अनुभव किया कि वास्तविक शिक्षण तो स्वाध्याय या स्व–शिक्षण से ही प्राप्त किया जा सकता है। जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जो शिक्षा से संबंधित न हो। इसीलिए गांधीजी ने आहार–विज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वच्छता व स्वास्थ्य से संबंधित विषयों का गंभीरता से अध्ययन किया तथा खाना बनाना, कपड़ा धोना, प्रेस करना, सफाई व अन्य दूसरे गृह–कार्य इत्यादि को भी सीखा।

शिक्षा का संबंध काम से न हो तो यह शिक्षा बेकार है। साबरमती आश्रम में गांधीजी ने विधिवत पाठशाला प्रारंभ की। जहां समस्त शिक्षण मातृभाषा में देना, विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाना, सभी विषयों का ज्ञान विशेष रूप से सफाई व आरोग्यशास्त्र की शिक्षा देना शामिल था। मातृभाषा के लिए उन्होंने यहां तक कहा कि जो मातृभाषा का अपमान करता है वह स्वदेशभक्त कहलाने लायक नहीं है।

असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी ने मेकाले द्वारा स्थापित शिक्षा व्यवस्था की कड़े शब्दों में आलोचना की थी। आज अध्ययन केवल परीक्षा देने के उद्देश्य से किया गया कठिन श्रम ही होता है और परीक्षा देने के बाद हम उसे यथासंभव जल्दी से जल्दी भूल जाने का प्रयत्न करते हैं। विदेशी भाषा में शिक्षा लेने के कारण हमारे घरवाले तथा आसपास के लोग उस ज्ञान से वंचित रह जाते हैं।

अक्टूबर 1937 में गांधीजी ने 'नयी तालीम' के नाम से जिस 'उद्योग केंद्रित स्वावलंबी शिक्षा' का प्रारूप देश के सामने रखा उस संदर्भ में उनका कहना है कि शिक्षा का माध्यम ही किसी उद्योग को बनाना चाहिए और चुने हुए उद्योग के माध्यम से सभी विषयों की शिक्षा देनी चाहिए। शारीरिक श्रम द्वारा ही बच्चों का मानसिक विकास होना चाहिए और शारीरिक श्रम की शिक्षा महज इसलिए नहीं दी जायेगी कि बच्चे स्कूल के संग्रहालयों के लिए चीजें तैयार करें अथवा ऐसे खिलौने बनाए जिनकी कोई कीमत ही न हो। शारीरिक श्रम द्वारा ऐसी चीजों का उत्पादन होना चाहिए जो बाजार में बिक सकती हो।

सन् 1944 में गांधीजी जब जेल से बाहर आये तो नयी तालीम के लिए एक नई दृष्टि एवं विचार लेकर आये। गांधीजी ने कहा कि नई तालीम जीवनभर जारी रहनी चाहिए। नयी तालीम के संबंध में अपनी अंतिम चर्चा में गांधीजी ने कहा था, ''सामान्यतः यह माना जाता है कि बुनियादी शिक्षा उद्योग द्वारा शिक्षण देना है। यह एक हद तक सही है। परंतु यह पूरा सत्य नहीं है। नयी तालीम की जड़ें और गहरी जाती हैं। यह तो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सत्य–अहिंसा के आधार पर टिकी है। सच्चा शिक्षण वह है जो व्यक्ति को सच्ची स्वतंत्रता दिलाये।'

गांधीजी ने नयी तालीम की नींव पर जिस ग्रामस्वराज का चित्र खींचा वह कुछ इस प्रकार है, ''मैंने ऐसे दरिद्र भारत की कल्पना नहीं की, जिसमें करोड़ों अनपढ़ और बेसमझ लोग बसते हों। मैंने तो उस भारत की कल्पना की है, जो अपनी संस्कृति के अनुकूल पथ पर हमेशा आगे ही बढ़ता रहेगा। मैंने ऐसे भारत की भी कल्पना नहीं की जिसकी प्रगति मरती हुई पश्चिमी सभ्यता की एक घटिया या बहुत

बढ़िया नकल हो। जो स्वप्न मैं देख रहा हूं, वह अगर कभी सच्चा निकल आया, अगर देश के सात लाख ग्रामों का हर एक ग्राम अपने आप में एक जीता जागता राष्ट्र बन गया, जिसमें कोई आलसी नहीं, कोई बेकार नहीं, जिसमें सब कोई उपयोगी कार्यों में लगे हैं, हर एक को पुष्टिकारक भोजन मिलता है, बस हवादार घरों में रहते हैं और उन्हें बदन ढंकने के लिए काफी खादी प्राप्त है और जिसमें सभी ग्रामवासी अपनी और अपने चारों ओर की सफाई के साधनों व सिध्दांतों का पूरा ज्ञान रखते हैं, तब हमारे राष्ट्र की जरूरतें उत्तरोत्तर बढ़ेंगी उन्हें हमें पूरा करना होगा।'' आज भी गांधी की पुकार एक चुनौती बनकर हमें ललकार रही है।

बुनियादी तालीम के खास का सिद्धांतों पर विचार

1. पूरी शिक्षा स्वाबलंबी होनी चाहिए। यानि, आखिर में पूंजी को छोड़कर अपना सारा खर्च उसे खुद देना चाहिए।
2. इसमें आखरी दर्जे तक हाथ का पूरा –पूरा उपयोग किया जाए। यानि, विद्यार्थी अपने हाथों से कोई न कोई उद्योग धंधा आखरी दर्जे तक करें।
3. सारी तालीम विद्यार्थियों की प्रांतीय भाषा द्वारा दी जानी चाहिए।
4. इसमें संप्रदायिक धार्मिक शिक्षा के लिए कोई जगह नहीं होगी। लेकिन बुनियादी नैतिक तालीम के लिए काफी गुंजाइश होगी।
5. यह तालीम फिर उसे बच्चे लें या बड़े, औरतें लें या मर्द, विद्यार्थियों के घरों में पहुंचेगी।
6. चूंकि इस तालीम को पानेवाले लाखों–करोड़ों विद्यार्थी अपने आपको सारे हिंदुस्तान के नागरिक समझेंगे, इसलिए उन्हें एक आंतर प्रांतीय भाषा सीखनी होगी। सारे देश की यह एक भाषा नागरी या उर्दू में लिखी जाने वाली हिंदुस्तानी ही हो सकती है। इसलिए विद्यार्थियों को दोनों लिपियां अच्छी तरह सीखनी होंगी।

हमारे जैसे गरीब देश में हाथ की तालीम जारी करने से दो हेतु सिद्ध होंगे। उससे हमारे बालकों की शिक्षा का खर्च निकल आएगा और वे ऐसा धंधा सीख लेंगे, जिसका अगर वे चाहें तो उत्तर–जीवन में अपनी जीविका के लिए सहारा ले सकते हैं। इस पद्धति से हमारे बालक आत्मनिर्भर अवश्य हो जाएंगे। राष्ट्र को कोई चीज इतना कमजोर नहीं बनाएगी, जितना यह बात कि हम श्रम का तिरस्कार करना सीखें। यंग इंडिया 1–9–21

नलिन कुमार मिश्रा, सी0पी0डी0 लीड,
आई0एस0ए0– *एस0सी0ई0आर0टी0, पटना*

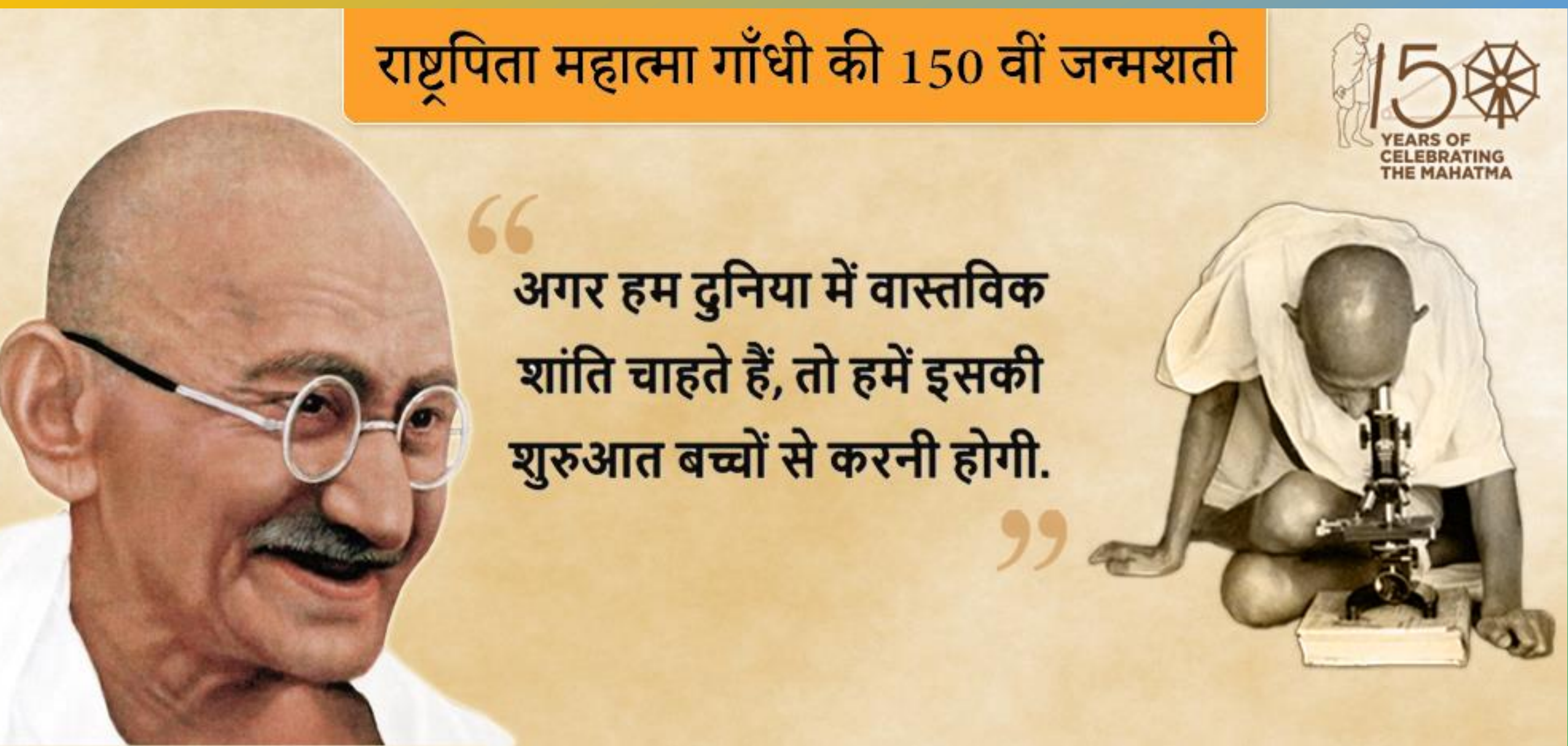

जब मैंने गाँधी जी के दर्शन किये

यह मेरा परम सौभाग्य है की मैंने न सिर्फ गाँधी जी के दर्शन किये वरण उनके चरण स्पर्श से भी नहीं चूका। यह लगभग 1946–47 की बात है मैं चौदह साल का एक सातवाँ का छात्र था। सारे देश में उन दिनों साम्प्रदायिक दंगे हो रहे थे। बिहार का पटना जिला भी उससे अछुता नहीं था। महात्मा गाँधी अपने अनन्य मित्र एवं सहकर्मी खांअब्दुल गफार खां के साथ आये थे। उन्हें लोग सीमांत गाँधी भी कहते थे। दानापुर सबडिवीज़न के नौबतपुर थाना अंतर्गत एक मुस्लिम बहुल गाँव है वे वही आये थे तथा साम्प्रदायिक सौहार्द की बातें करते थे तथा इस कार्य हेतु चंदा मांगते थे। उनके प्रति मन में बहुत आदर था। गाँधी जी के ठीक बगल में सीमांत गाँधी भी थे। मैंने अपने पास के चार आने जो बहुत मिहनत से बचाकर रखे थे उनके चरणों पर रखना चाहा तो खांअब्दुल खां ने बस रकम लेकर मुझे बहुत प्रोत्साहित करने वाली बातें की। वह आज भी मेरी संचित निधि है और मुझे इस बात का गर्व है की मैंने महात्मा गाँधी और खां अब्दुल गफार के दर्शन एक साथ एक मंच पर किया। मैं धन्य हो गया।

सुधेश्वर प्र. सिंह
ग्राम–जाफरा भगवानपुर
थाना–नौबतपुर, जिला–पटना

महात्मा गाँधी का नाम लेते ही एक तपः दूत एवं संत की कृशकाय शरीर सामने आ जाती है। आज की तिथि में गाँधी एक व्यक्ति से ज्यादा एक विचार के रूप में याद किये जा रहें हैं। गाँधी को जीवन में उतारना जितना कठिन है उतना ही दुरूह, उनके विचारों का विश्लेषण करना भी। गाँधी को बिहार के चंपारण ने महात्मा गाँधी बना दिया। उनका मूल मंत्र सत्य और अहिंसा था तथा हथियार सत्याग्रह।

वे सदा कहते रहे कि सत्य की प्राप्ति के संसाधन भी पवित्र हों। वे हर विषय को मूल रूप में पकड़ते थे इसलिए उन्होंने Basic Education की शुरुआत की। गाँधी जी चाहते थे की शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का न सिर्फ मानसिक विकास हो बल्कि उसके Hand-Heart and Head हाथ–हृदय और मस्तिष्क का सम्मिलित विकास हो। मैकाले की शिक्षा पद्धति में धीमा मस्तिष्क के विकास ने हिरोशिमा एवं नागाशाकी का अंजाम दिलवा दिया। हृदयहीन व्यक्ति पढ़ लिख कर रावण बन जाता है और परस्त्री हरण से लेकर भांति भांति का जुर्म ढाने लगता है। पढ़ा लिखा नौजवान 10 Kg का सामान ढोने में भी रेल की यात्रा में कुली की सहायता लेता है। गाँधी के बाद उनका बुनियादी तालीम लगभग मृत प्राय है। गाँधी जी छोटी चीजों के माध्यम से बड़ी चीज हासिल करते थे।

चरखा के माध्यम के उन्होंने लंदन के मैनचेस्टर के सूती मीलों की टें बुलवा दी। सत्याग्रह की शुरुआत दांडी यात्रा में नमक कानून तोड़ने के लिए किया था। यही नमक सत्याग्रह की शुरुआत अंग्रेजी सरकार के ताबूत में कील बनकर अपना काम कर गया। गाँधी तड़क–भड़क में विश्वास नहीं करते थे। 15 अगस्त 1947 को जब देश आजादी का जश्न मना रहा था तब वे नोआखाली तत्काल पूर्व पाकिस्तान का एक सुदूर गाँव में साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए कार्यरत थे। उनके उच्च विचारों से कई लोग प्रसन्न नहीं थे और उनके विचारों को हिंसा द्वारा समाप्त करने की साजिश के तहद उन्हें गोली मारकर जेसस–क्राइस्ट एवं सुकरात की श्रेणी में पहुंचा दिया। उनकी मृत्यु से सारा देश गंभीर शोक में दिख पड़ा।

रामधारी सिंह दिनकर ने उनकी मृत्यु पर कहा:–

यह लाश मनुज की नहीं
मनुजता के सौभाग्य विधाता की।
बापू की अरथी नहीं चली
अरथी यह भारत माता की।

इस वर्ष गाँधी जी की 150 वी वर्षगांठ मनाई जा रही है एतदर्थ बड़े बड़े आयोजन किये जा रहें हैं इस बहाने भी हमने अपने मुहँ में जो कालिख लेपा था उसे गाँधी रूपी रुमाल से कुछ पोछने का प्रयास कर रहें हैं। गाँधी जी के बारे में आइंस्टाइन ने कहा था की आने वाली पीढियां मुश्किल से विश्वास करेंगी की एक हाड मांस का ऐसा पुतला कभी धरती पर चलता था।

चन्द्रशेखर
आई0 एस0 ए0–एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

बाल विवाह और आरंभिंक वैवाहिक जीवन

हमारे देहात में आज भी बहुत सी जगह बाल विवाह की परंपरा है। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में तो शहरी समाज और उच्च वर्ग मे भी यह कुरीती आम थी। गांधी भी बचपन में इसके शिकार हुए। सात साल की उम्र में परिवार वालों ने उनकी सगाई एक जानकार परिवार की उम्र बालिका कस्तूरबा बाई के साथ तय कर दी थी और चौदह साल की अवस्था तक पहुंचते दोनों का विवाह भी हो गया था।

उन दिनों गांधी तो पढ रहे थे लेकिन कस्तूरबा अशिक्षित थी गांधी उन्हें घर पर रहकर पढने की सलाह भी देते थे लेकिन कस्तूरबा की पढाई में कतई रुचि नही थी। गांधी इस बात को लिए उनसे नाराज भी रहते थे लेकिन कस्तूरबा भी दृढ़ निश्चयी थी। जिस काम में उनका मन नहीं लगता था वह नहीं करती थी और अपने रुचि का काम अवश्य करती थी।

गांधी और कस्तूरबा की आदतों में और भी कई मामलों में मत भिन्नता थी। गांधी संकोची स्वभाव के अंतर्मुखी युवक थे और कस्तूरबा सजने धजने की शौकीन, सबसे निसंकोच बात करने वाली बहिर्मुखी चचंल स्वभाव की युवती। गांधी को उनका यह स्वभाव पसंद नही था और कस्तूरबा को गांधी की पढाई और सादगी से रहने वाली सलाह बेतुकी लगती थी।

वैसे भी कस्तूरबा उम्र में गांधी से करीब छह माह बड़ी थी और गलत बात पर दबना उनकी आदत नहीं थी। बाद में उनके इस दृढ निश्चयी स्वभाव की गांधी नें भी प्रशंसा की है और कहा है कि सत्य के प्रति आग्रह सत्याग्रह का पहला पाठ उन्होंने कस्तूरबा से ही सीखा था।

गांधी और कस्तूरबा में कुछ स्वभावगत मतभेदों के बावजूद एक दुसरे के प्रति प्रेम और सम्मान का भाव भी था। यह शायद उन दोनों के भारतीय संस्कारों का प्रतिफल था। गांधी कस्तूरबा को पढाई के लिए भी संभवतः इसीलिए प्रेरित करते थे जिससे वे भी शिक्षा का लाभ उठा सकें। गांधी जी ने यह प्रयास अंतिम समय तक जारी रखा।

बहुत समय बाद कस्तूरबा जी को भी शिक्षा का महत्व समझ में आया और उन्होंने विभिन्न आश्रमों में रहते हुए काम चलाऊ विधा अध्ययन और स्वध्याय किया भी जिसके पीछे गांधी की प्रेरणा ही प्रमुख कारण थी।

गांधी और कस्तूरबा का प्रारंभिक वैवाहिक जीवन भारतीय संयुक्त परिवार के युवाओं के जैसे सामान्य ही था। घर की छोटी बहू होने के कारण घर गृहस्थी के रसोई आदि के अधिकांश काम कस्तूरबा को ही करने पड़तें थे। स्वस्थ और घरेलू कामों में दक्ष कस्तूरबा ससुराल की यह जिम्मेदारी बड़े जतन से निभाती थी।इसलिए बहुत जल्दी पति और परिजनों की चहेती बन गयी थी। कस्तूरबा का यही गुण भविष्य में गांधी द्वारा शुरु किये गयें कई आश्रमों के कुशल संचालन में काम आया था और वह स्वयं भी आश्रम वासियों की "बा" अर्थात "मा" बन गई थी और बाद के सालों में "बा" के नाम से मशहूर हुई।

मनीष ठाकुर

. एस0 सी0 ई0 आर0 टी0 पटना

Teaching Engliish as Second Language – *First stage*

Beginners को Second Language के रूप में English सिखाना/Teaching किसी भी teacher के लिए एक challenging task है। Teacher का background और experience का level कुछ भी हो उन्हें second language के रूप में English सिखाने में new challenges का सामना करना ही पड़ता है। ऐसा first language के साथ भी होता है चूंकि हर language की अपनी कुछ unique बातें हैं जिन्हें teachers को face करना ही पड़ता है।

कोई भी language बहुत short time में अच्छी तरह नहीं सिखाया जा सकता है इसके लिए कुछ समय की ज़रुरत है। Syllabus के आधार पर जो text books तैयार की जाती हैं उनमें इन बातों का ध्यान रखकर ही पुस्तक तैयार की जाती है फिर भी एक limited period में बच्चे text book के अनुसार नहीं सीख पाते है।

सभी challenges के बाद भी अगर planned way में सिखाने का process जारी रखा जाए और उसपर consistently कार्य किया जाए तो अच्छा result प्राप्त होगा ही।

अधिकतर ऐसा देखा जाता है कि teacher बच्चों को English सिखाने की शुरुआत albhabet से करते हैं और शुरु ही में अक्सर पहले ही दिन से बोर्ड पर लिख देते हैं और बच्चा इसे देखकर लिखता रहता है और यह सिलसिला बस चलता रहता है, जबकि linguists का मानना है कि सबसे पहले बच्चों को listening और speaking की activities कराई जाए चूंकि oral language ही language अन्य skills की बुनियाद है और जिसकी oral language जितनी अच्छी होगी भाषा उतनी ही विकसित होगी। इसलिए बच्चों को listening और speaking की practice के लिए छोटे–छोटे rhymes को खूब सुनने और गाने का अवसर दिया जाना चाहिए। इसके साथ–साथ अंग्रेज़ी के छोटे–छोटे sentences, instructions और commands को बच्चों के साथ बोला जाए और उन्हें भी बोलने के लिए motivate किया जाए। Rhymes याद हो जाने के बाद alphabet सिखाने के लिए नीचे दी गई line (इसी प्रकार और भी) उन्हें याद कराई जाए:

apple red, apple लाल | **खाकर हुए गुलाबी गाल**
butterfly दूध–मलाई | **खाकर fat हुई है भाई**
cat आई cycle पर चढ़कर | **मुंह में अपने rat पकड़ कर**
drum बजाओ डम डम डम | **नाचो, dance करो छम छम**

यह सब अगर picture के साथ हो तो बहुत प्रभावी होगा। इसका animation हो और background से किसी में छोटी बच्ची और किसी में छोटे बच्चे की आवाज़ आए तो बच्चों को और interest मिलेगा।

इस प्रकार उन्हें sounds निकालने के साथ–साथ words और उसके meanings खुद समझ में आने लगेंगे। जब यह line उन्हें याद हो जाये तब इसे बोर्ड पे लिख दिया जाए। इसके बाद logographic reading (शब्द चित्र पठन) का अभ्यास कराया जाए। जैसे सेब के चित्र के नीचे apple लिखा हुआ हो। इसके लिए flash card भी बहुत उपयोगी होगा। अब apple word से ही, a, p, l, e, letters सिखाए जाएँ। जब बच्चे यह letters सीख जाएँ तो उन्हें इन letters को अपनी book में खोजने के activity कराई जाये। चूंकि books में small letters ही होते हैं capital letters कम होते हैं फिर भी इस बात का ध्यान रखा जाये कि small letters के साथ ही उसका capital letters भी सिखा दिया जाये। इस क्रम में उन्हें letter लिखने की भी practice कराई जाए जिसमें mechanics of writing का पूरा ध्यान रखा जाए। letter के पहचान के लिए मिलते–जुलते letters में difference ढूंढनें, small और capital letters जो दोनों same आकार के होते हैं उनकी पहचान, capital L small l- i n, h u आदि letters को ठीक से समझने की activities कराई जाये इसके साथ–साथ बोर्ड किसी दिए गए letter में कुछ घटा (मिटा) या जोड़कर नये letters बनाने की गतिविधि कराई जाए।

Beginning में अगर बच्चों को small letter और capital letters की identification उसके sounds के साथ–साथ ठीक से लिखना आ जाता है तो समझिए गाड़ी पटरी पर आ गई है। इतना सीखते–सीखते बच्चों को कई rhymes याद हो जायेंगे, बहुत सारे words की meaning भी आ जाएगी। बच्चों को stories सुनाने के लिए language का इस्तेमाल bilingual करना चाहिए और target words पर पूरा emphasis दिया जाना चाहिए। First stage में इतना जरूरी है।

अरशद रजा
. म0 वि0 पचासा नालंदा

सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा

(शिक्षाविद और उद्योगी सोनम वांगचुक की कहानी)

(चौथा भाग)

सोनम वांगचुक एक अभियंता, अविष्कारक और शिक्षा सुधारवादी हैं। वह छात्रों के एक समूह द्वारा 1988 में स्थापित स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL) के संस्थापक–निदेशक भी हैं। सोनम जी को आर्थिक प्रगति के लिए विज्ञान और संस्कृति का रचनात्मक उपयोग करते हुए लद्दाखी युवाओं की जिंदगी सुधारने के लिए जाना जाता है। इन्हे SECMOL परिसर को डिजाइन करने के लिए भी जाना जाता है जो पूरी तरह से सौर–ऊर्जा पर चलता है। सोनम वांगचुक जी को सरकारी स्कूल व्यवस्था में सुधार लाने के लिए सरकार, ग्रामीण समुदायों और नागरिक समाज के सहयोग से 1994 में ऑपरेशन न्यू होप शुरु करने का श्रेय भी प्राप्त है। इन्हे रमन मैगसेसे पुरस्कार से नवाजा गया है। यह कहानी डॉ० आनंद नाडकर्णी जी द्वारा सोनम वांगचुक जी से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित है।

प्रश्नः– हमारा जो आज का जो थीम है from intension to completion और आप पर्वतीय विभाग से आये है, पर्वत राज्यों से आये है from hilly region तो समझो intension जो इच्छा है हमारी वो समझो शुरुआत है एक बहुत बड़ा पर्वत मुझे सर करना है उसकी और समझो completion जो है वो उसके summit पे जाना है तो अगर ये यात्रा एक सामने बैठे हुए विद्यार्थी को एक युवा को समझो पूरी करनी है from intension to completion तो from your experience आप उनको young climber को क्या टिप्स दोगे।

सोनम वांगचुक जी: अगर आपने एक पर्वत चढ़नी है, एक चुनौती लेनी है यानि की तो मैं कहूँगा कि सबसे पहले तो आप meticulous planning जिसे कहते है हर गहराई में जाकर क्या हो सकता है क्या करना है और क्या हो सकता है उन सब की तैयारी करे, बिना तैयारी के कोई तीसमार खां ना बनिए कोई बड़ी बात नहीं है। दुश्मन को कभी कमजोर ना समझे जैसा कहते है तो meticulous planning बहुत जरुरी है। और आपने पर्वत चढ़ने की बहुत अच्छी उदाहरण दी क्यूंकि मैं जब चट्टानों पे चढ़ता हूँ तो बहुत सोच में पड़ता हूँ एक तरह से एक meditative सा। हम अपने व्यवहारिक जीवन में बहुत ड्रामे करते है, कुछ काम अच्छी तरह नहीं भी करे तो उसका लिपाई–पोताई कहते है ना लिपा पोती करके, कवर करके आगे बढ़ जाते है। हो जाएगा, चल जायेगा आप जब किसी चट्टान पे, पर्वत पर चढ़ रहे हो उसमे सौ प्रतिशत सच्चाई के अलावा कुछ हो नहीं सकता। कोई भी चलेगा आपको नीचे पहुंचा सकती है पाताल लोक में। तो आपको अपने काम से सच्चाई रखनी होगी। जो कर रहे है सौ प्रतिशत सही और सही ना हो तो आप फिसल के नीचे जायेंगे। तो वो एक बहुत बड़ी सीख है तो हर चीज को उसकी गहराई में जाकर सच्चाई और निष्ठां के साथ करना मेरे ख्याल से बहुत जरुरी है। फिर उसके बाद चुनौतियाँ आयेंगी गिरेंगे आप कभी कभी, फिर उठे, गिरना बड़ी बात नहीं है, गिर कर संभल कर उठना बड़ी बात है तो ये मैं कहूँगा। फिर एक उर्दू में शेर याद आती है मुझे, भाषाएँ बहुत अच्छी लगती है और भाषाओं की जो ये कविताए, शेर है, किसी ने कहा है : फलक को जिद है जहाँ बिजलियाँ गिराने की हमें भी जिद है वही आशियाँ बनाने की।

प्रश्नः– आपने हिंदी, उर्दू भाषाए आपको बहुत अच्छी लगती है और कौन सी कौन सी भाषा आती है आपको?

सोनम वांगचुक जी: मैं भाषाएँ सिखने में बहुत रूचि रखता हूँ। मैंने कई साल पहले नेपाली सीखी, उसके बाद फ्रेंच सीखी, कुछ हद तक जर्मन सीखी, तिब्बतन बोलता हूँ तो इस तरह कोई सात आठ।

प्रश्नः– फ्रेंच कैसे सीखी आपने, जरुरत के तौर पर सीखी।

सोनम वांगचुक जी: जी जी आपने अच्छा पूछा। ये जो मैं मिटटी के घर बनाता था तो एक वक्त ये आया कि ये मिटटी लद्दाख की मिटटी को तो मैं समझा, मगर मिटटी जो हर दस किलोमीटर पर अलग अलग, नेपाल जाऊं तो बिलकुल अलग मिटटी, दिल्ली जाऊं तो मिटटी अलग, तो मिटटी के जो विज्ञान को बहुत हाई टेक साइंस है, हम मिटटी को तो पैरो पे कुचल देते है, मगर मिटटी बहुत पेचीदा सामग्री है। तो मैंने इसको समझना सिखा, सोच समझने की चाही, मगर देखता हूँ कि कोई ऐसी संस्था नहीं है जहाँ मिटटी का विज्ञान सिखाया जा रहा है। हालांकि आप यकीन नहीं मानेंगे, हालांकि विश्व की आधी आबादी मिटटी के घरों में रहती है। फिफ्टी परसेंट ऑफ द वर्ल्ड लिव्स इन अर्थ हाउसेस बट जीरो परसेंट, जीरो परसेंट ऑफ आवर institution

architecture, engineering टीच दिस साइंस। अजीब नहीं है कि आधी आबादी जिस ज्ञान को प्रयोग करते है कोई ऐसी संस्था नहीं है जो ये सिखाती है, ये गलत होगा कोई नहीं है कहना भारत में, विश्व में एक संस्था है जो मिटटी के विज्ञान में एमएससी, पीएचडी, मास्टर से लेकर पीएचडी तक उसका अध्यन और उसका सिखाने का काम का काम करती है। वो था फ्रांस में तो मैंने सोचा मैं जाके सीखूंगा। पता चला वहां सिर्फ फ्रेंच में सिखाते है और कोई भाषा नहीं है। तो मैंने कहा मैं फ्रेंच सीखूंगा तो मैं एक महीना पहले गया फ्रेंच सीखने लगा और 6 महीने के कोर्स के साथ साथ में फ्रेंच उसी के लिए सीख ली क्यूंकि वो यूनिवर्सिटी लेनी थी और वो खतम।

क्रमशः ...

Link: https://cutt.ly/QwylbX3

श्रुतिलेखन : अतुल वर्मा
आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0, पटना

SCERT-ISA द्वारा अगस्त–सितम्बर 2019 की गतिविधियाँ

- D.El.Ed. कोर्स प्रथम वर्ष के 12 विषयों के सामग्री विकास के लिए 12–17 सितम्बर 2019 तक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में SCERT के साथ साधन सेवियों ने हर विषय का प्रारूप तैयार किया जो आगे की कार्यशालाओं में अंतिम रूप में लाए जाएँगे।
- शिक्षक शिक्षण संस्थाओं में नये नियुक्त होने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए Induction Training Module के प्रारूप के विस्तार के लिए 12–17 सितम्बर 2019 तक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- मानव संसाधन विकास विभाग, NCERT, NIEPA, SCERT Bihar एवं BEPC के द्वारा निष्ठा (शिक्षकों के लिए समेकित प्रशिक्षण कार्यक्रम) पर राज्य साधन सेवियों की 20 से 25 सितम्बर 2019 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें 185 केआरपी एवं 38 एसआरपी तैयार किये गये। इसमें राष्ट्रीय स्तर से आए NCERT के 15 NRG एवं NIEP। के दो NRG सदस्य गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षण दिए। इसके बाद राज्य स्तर पर और ऐसे प्रशिक्षण आयोजित होंगे। लगभग 3500 केआरपी एवं एसआरपी तैयार होंगे जो प्रखण्ड स्तर पर लगभग चार लाख शिक्षकों प्रशिक्षण देंगे। यह विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत सोचे गए सीपीडी कार्यक्रम से संबंधित है।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए प्रबंधन सूचना प्रणाली (Management Information System) की रूपरेखा तैयार की गयी है। इस रूपरेखा को विभिन्न हितधारकों के साथ साझा करके अंतिम रूप देने की योजना है।
- SCERT के वेबसाइट पर Professional Learning Community के आठ समूहों का गठन किया गया है। इन मंचों पर शिक्षकों के बीच चर्चा प्रोत्साहित की जाएगी जिसके तहत वे अपने विषयों से संबंधित प्रश्नों के हल अपने समवयों के साथ खोजेंगे। साथ–ही Massive Online Open Course पर शिक्षकों एवं शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्तिक विकास के लिए कोर्स upload किया गया है – ***सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सूचना एवं संचार तकनीक (ICT) का समावेशन***
- Teacher Performance संबंधित midline सर्वे का काम शुरू किया गया है। AMC के सितम्बर को दी गई।

परख

जानिए आप कितने चिंतनशील (refletive) हैं

आइये खुद को परखें। इस प्रश्नावली के आधार पर खुद का आकलन करें। निम्नलिखित प्रश्नों में जिनका उत्तर 'हमेशा' में दिया है उसके लिए खुद को 5 अंक दें। अगर आप कभी कभी ऐसा करते हैं तो 2 अंक दें अगर नहीं करते तो 0 अंक दें। कुल 100 अंक हैं। आपको कितने प्रतिशत अंक मिले? अपने अंक साथियों के साथ साझा करें। अपनी स्थिति को कैसे सुधारेंगे? क्या कोई समझ बनी?

क्रम संख्या	सूचक	हमेशा (5 अंक)	कभी कभी (2 अंक)	कभी नहीं (0 अंक)
1	क्या आप बच्चों की क्षमता के अनुसार काम करने की आवश्यकता महसूस करते हैं या केवल किताब पढ़ाने पर ध्यान देते हैं?			
2	क्या जो भी विषय आप जिस कक्षा में पढ़ाते है उसका सीखने के प्रतिफल के बारे में आप जानते है?			
3	क्या आप अवलोकन के प्रतिफल का विश्लेष्ण करते हैं?			
4	क्या आप नवाचार करते हैं?			
5	क्या आपने खुद में सुधार लाने के लिए प्रयास किया है?			
6	क्या आपमें कोई सुधार आता रहा है?			
7	क्या आप अपने काम की स्व–समीक्षा एवं आलोचनात्मक समीक्षा करते है?			
8	आप चिंतनशील शिक्षक के रूप में व्यक्तिगत विकास की आवश्यकताओं को जानते हैं?			
9	आप अपने विकास के लिए समय निकालते हैं?			
10	क्या आप अच्छे श्रोता हैं?			
11	क्या आप अपनी बात दूसरों तक पहुँचा पाते हैं?			
12	क्या आप अपने सहकर्मियों के विकास के लिए उनसे बात करते हैं?			
13	क्या आप अपने किऐ हुए अच्छे काम को दूसरों के साथ साझा करते हैं?			
14	क्या आप अपने सहकर्मियों के मजबूत पक्ष को समझते हैं?			
15	क्या आप पेशेवर तरीके से दूसरे शिक्षकों के साथ जुड़ते हैं?			
16	क्या आपके काम से बच्चों के अनुभव एवं स्तर आगे बढ़ा पाते हैं?			
17	क्या आप बच्चों को सिखाने के लिए रणनीति बनाते हैं?			
18	क्या आप बच्चों के व्यक्तिगत आवश्यकता, क्षमता एवं आकांक्षाओं को पूरा कर पाते हैं?			
19	क्या आप बच्चों के साथ सीखने के उद्देश्य पर बात चीत करते हैं?			
20	क्या आप प्रभावी तरीके से पाठ को पढ़ने से पहले पूरी तैयारी करते हैं?			
	कुल अंक – 100 आपका अंक			

नीरज दास गुरु
सतत पेशेवर विकास
आई० एस० ए०–एस०सी०ई०आर०टी०, पटना

सामंजस्य

प्राथमिक कक्षाओं में विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को उसके प्रचलित नाम के अनुसार पहचान बताने के लिए बच्चों को जब अपने आस–पास की वस्तुओं में विभिन्न वस्तुओं में ज्यामितीय आकृति के पहचान करने का मौका दिया जाता है तब बच्चे कहते हैं – मेज, फर्श, खम्भा, गिलास इत्यादि। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान की नियमित कक्षा में प्रशिक्षु शिक्षकों को विषयगत अवधारणा के विनियमन की कुशलता के विकसित करने के लिए मैनें इसी प्रक्रिया को दूसरे तरह से करना प्रारंभ किया। चाकू के एक हिस्से का आयताकार होना और दूसरे हिस्से का त्रिभुजाकार होना यह साबित करता है कि ज्यामितीय आकृति के कारण वस्तु का इस्तेमाल/प्रयोग बदल जाता है।वृत्ताकार सतह अगर खड़ा है तो चक्का और यदि उसे सुला दिया गया तो वह मेज बन जाता है। कक्षा में उपस्थित प्रशिक्षु द्वारा छोटे–छोटे समूह में विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों के दैनिक प्रयोग की सूची बनायी जा रही थी। वे लिख रहे थे – दूरी तय करने के लिए गोल चक्का, बैठने के लिए वृत्ताकर/ आयताकार/त्रिभुजाकार मेज, सामान रखने के लिए घन या घनाभ की आकृति, घन, घनाभ वाले आकार आकृति इत्यादि। इसी तरह ज्यामितीय आकृति के व्यवहारिक प्रयोग की सूची बनाने के क्रम में घिरनी का जिक्र आया। घिरनी का इस्तेमाल कहॉ–कहॉ पर और क्यों किया जाता है इसपर चर्चा के दौरान मैनें झडोतोलन का उदाहरण दिया। अधिकांश प्रशिक्षु यह सुनकर चौक गये कि झंडोतोलन में घिरनी का प्रयोग होता है।

झंडोतोलन में घिरनी के ऊपर से रस्सी के घुमने का भौतिकी एवं गणितीय महत्व विषय के रोचकता को बढ़ाता है। रस्सी की लम्बाई, रस्सी पर लगा बल, गाँठ का खुलना आदि अनेक ऐसी घटनाएं हैं जिनके अध्ययन से विज्ञान सीखना संभव है झंडोत्तोलन में भाषा समाज अध्ययन के भी बहुत सारे सन्दर्भ गिनाए गए। बुनियादी क्रिया कलाप को विषयगत अवधारणाओं के साथ प्रस्तुत करने पर विषय के प्रति अपनत्व की भावना बढ़ी।

विद्यालय वातावरण में इस तरह के बुनियादी व्यवहार कुशलता के विकास की परम्परा शिथिल पड़ गयी है। इन कमियों के कारण ही मेट्रो मैन के नाम से मशहुर दिल्ली मेट्रो के प्रमुख सलाहकार ई0 श्रीधरण ने मुखर होकर इंजिनियरिंग डिग्री में एक्टीवीटी प्वांइट की पेशकश की है। गतिविधियाँ विद्यालय स्तर पर वर्गवार एवं विषयवार अधिगम प्रतिफल को प्राप्त करने एवं विषयगत कौशल के विकास में अहम भुमिका निभायेगा।

उद्योग जगत द्वारा विषयगत अवधारणााओं के व्यवहारिक प्रयोग पर बखुबी चिंतन किया जाता है। प्रयोग किये जाने वाले वस्तु के निर्माण के समय उसके पदार्थ एवं उसकी ज्यामितीय आकृति दोनो पर अध्ययन किया जाता है। जैसे – यदि गर्म दुध को जल्दी ठंढ़ा करना है तो वे बड़े क्षेत्रफल वाले सुचालक पदार्थ से बने पात्र का विज्ञापन दिखलाते हैं जबकि गर्म पानी को अधिक देर तक गर्म रखने के लिए कम फैलाव वाले कुचालक पदार्थ (बेलनाकार) आकृति का पात्र उपभोक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। मनोरंजन जगत में भी विषयगत अवधारणाओं (गणित एवं भौतिक) के व्यवहारिक पक्ष का बड़ी बारीकी से प्रयोग किया जाता है। इसी तरह से खेल सामग्री के निर्माण में भी व्यवहारिक पक्षों का ध्यान रखा जाता है।

सिद्वान्त और व्यवहार के बीच के फासलों को कम करने की जिम्मेवारी शिक्षकों की होती है। वर्गकक्ष में प्रभावी विनियमन के लिए शिक्षक की कुशलता, एक टेक का कार्य करता है। जिसके दम पर वह अपनी जानकारी, तकनीकि साधन एवं अभिवृति के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। वर्गकक्ष में अधिगम का प्रभावी हाने इस सामंजस्य पर निर्भर करता है।

सामाज में व्यक्ति की सफलता उस व्यक्ति के कार्य करने की कुशलता पर निर्भर करता है। व्यक्ति कितना जानता है इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कौन सा कार्य किस तरह से सम्पन्न करता है और उसके बारे में कितना सोचता है।

डा रश्मि प्रभा *प्राचार्य*
डायट नूरसराय नालंदा बिहार

हमें रक्त के बारे में कैसे पता चला?

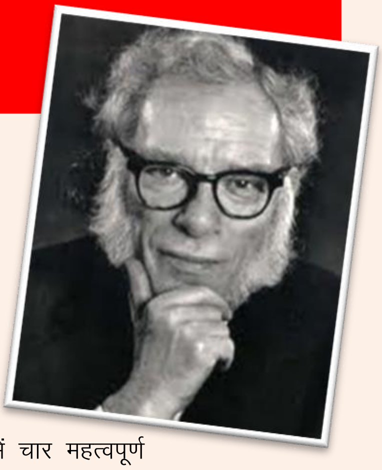

आईज़ैक असिमोव

हिंदी अनवादः अरविन्द गप्ता

अगर हमारा शरीर कहीं कट जाए तो उसमें से खून निकलता है। जानवरों में भी इसी तरह खून निकलता है। इससे हम खून के बारे में जानते हैं।

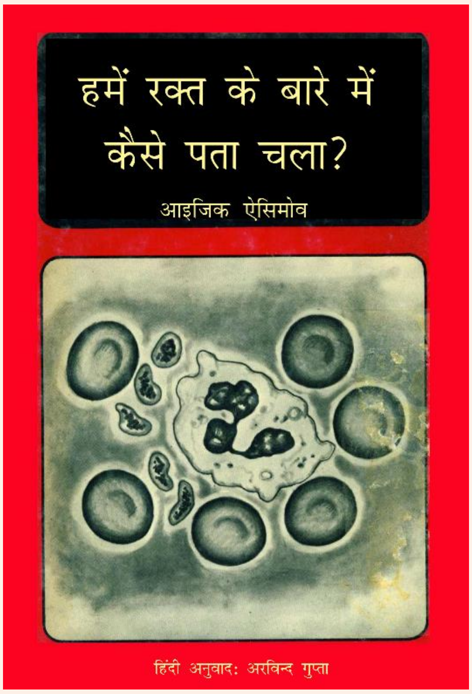

खून बहुत जरूर है, यह बात भी हम जल्दी समझ जाते हैं। जिन लोगों के शरीर से बहुत ज्यादा खून निकलता है वे बहुत कमजोर हो जाते हैं। उन्हें स्वस्थ्य होने में बहुत समय लगता है। शरीर से बहुत ज्यादा खून निकलने से लोग मर भी सकते हैं।

इस वजह से बहुत से लोग खून को जीवन मानने लगे। वो रक्त को शरीर का जीवन वाला भाग मानने लगे।

उदाहरण के लिए बाइबिल में ईजराइलवासियों को यह हिदायत दी गई है कि वे रक्त से सना मांस न खाएं। बुक ऑपफ ड्यूटोरमोनी (अध्याय 12, छंद 23) में लिखा हैः 'यह सुनिश्चित करो कि तुम रक्त मत खाओ, क्योंकि रक्त जीवन है।'

यह सही नहीं हो सकता। क्योंकि खून बिना निकले भी बहुत से लोग और जानवर मरते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि रक्त जीवन के लिए महत्वपूर्ण नहीं है। इसका यह आशय है कि जीवन के लिए रक्त ही नहीं अन्य बातें भी महत्वपूर्ण हैं।

ईसा से 400 साल पहले यूनानी चिकित्सक हिपोकरोहटीज (460–370 ईसा पूर्वी) और उनसे अनुयायियों के अनुसार शरीर में चार महत्वपूर्ण तरल थे जिनमें से एक रक्त था। इन चारों तरलों का आपस में सही संतुलन ही अच्छी सेहत का राज था।

आज हम जानते हैं कि अच्छी सेहत का मामला इससे कहीं अध्कि जटिल है। पर अच्छे स्वास्थ्य में रक्त की एक अहम भूमिका है इसे भी हम स्वीकारते हैं।

ऐसा नहीं है कि शरीर में रक्त एक जगह पर सोया पड़ा रहता है। जब किसी का शरीर कटता है तो उसमें से खून बहुत तेजी से बहता है। इसके साथ–साथ खून का बहना दिल की धड़कन के साथ कम–ज्यादा होता है। इससे कुछ लोगों को लगा कि हमारा हृदय खून को लगातार अंदर की ओर खींचता है और बाहर की ओर धक्का देता है।

हरेक व्यक्ति का दिल धड़कता है। सीने पर हाथ रख कर आप अपने हृदय की धड़कन को महसूस कर सकते हैं। हृदय नियमित रूप से धड़कता है – व्यस्कों एक मिनट में सत्तर बार और बच्चों में कुछ अध्कि तेजी से। जब तक आप जिन्दा हैं तब तक आपका हृदय धड़कता रहेगा। मरने पर दिल की ध्ड़कन बंद हो जाएगी।

इससे लगता है कि खून से ज्यादा महत्वपूर्ण है – बहता हुआ खून जो हृदय द्वारा सम्पन्न होता है।

...... आगे पढ़ने के लिए लिंक पर क्लिक करें।

Book: HOW DID WE FIND OUTABOUT BLOOD? - ASIMOV HINDI: ARVIND GUPTA

Book PDF Link: http://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/asimov-blood-h.pdf

संग्रहः शाश्वत बसु

आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0 पटना

MATHS Activity

अरविन्द गुप्ता

कागज का कोणमापी

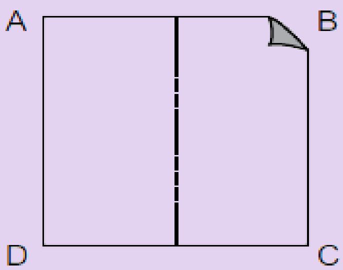

1. एक 10-सेमी भुजा के वर्ग ABCD को मध्य-रेखा मोड़ें।

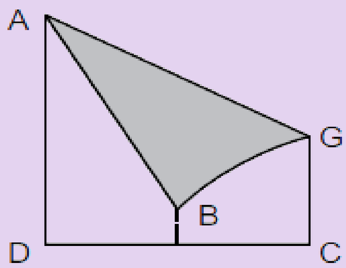

2. कोने B को मध्य-रेखा पर रखें जिससे ऊपर की तिरछी रेखा बिंदु A से होकर गुजरे।

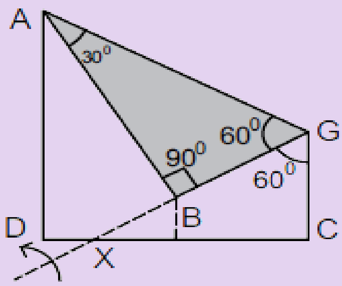

3. कोण AGB 60-अंश का होगा। क्योंकि कोण ABG 90-अंश का है इसलिए कोण BAG 30-अंश का होगा। फिर नीचे के फ्लैप को रेखा GX पर ऊपर मोड़कर अंदर की ओर दबाएं।

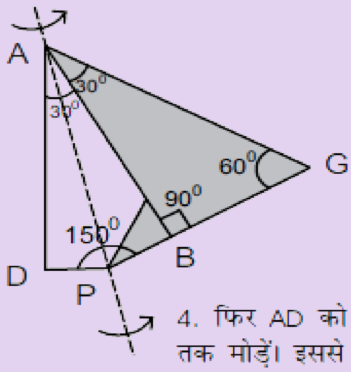

4. फिर AD को AB तक मोड़ें। इससे कोण DAB दो बराबर भागों में बंट जाएगा।

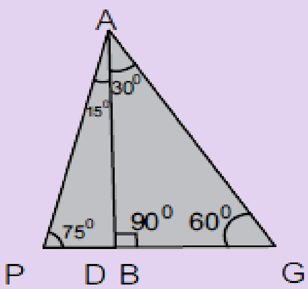

5. कागज के इस कोणमापी से आप 15, 30, 45, 60, 75 और 90-अंश के कोणों को आसानी से नाप सकते हैं। इसलिए अगली बार अगर आप कोणमापी ले जाना भूल जाएं तो झट से उसे कागज से मोड़ लें।

नम्बरी दोस्त

प्राचीन यूनानी गणितज्ञ पायथागोरस ने 'पायथागोरियन आर्डर' नामक एक समुदाय स्थापित किया था। उसके सदस्यों का मानना था कि अंकों द्वारा दुनिया की सभी घटनाओं को समझाया जा सकता है।

उन्हें दो संख्याएं विशेष रूप से पसंद थीं। पहली थी 220 और दूसरी 284 थी। अगर आप 220 के सभी घटकों को जोड़ें (1 और 220 को छोड़कर) तो उनका योग 284 होगा। इसी प्रकार अगर आप 284 के सभी घटकों को जोड़ें (1 और 284 को छोड़कर) तो उनका योग भी 220 होगा। इस अजीबो-गरीब रिश्ते के कारण पायथागोरियन समुदाय ने इन संख्याओं को 'मित्र-संख्याओं' का दर्जा दिया। यह संख्याएं दोस्ती की प्रतीक थीं।

संग्रहः शाश्वत बसु
आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0

Science Activity

अरविन्द गुप्ता

कूदने वाला कीड़ा

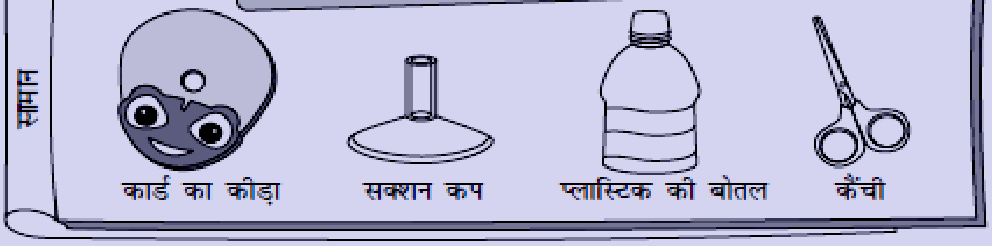

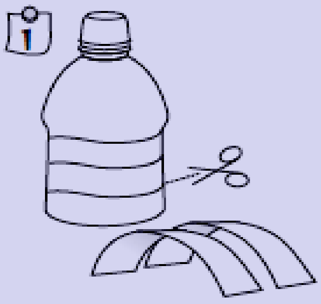

पुरानी प्लास्टिक की बोतल से 1-सेमी चौड़ा छल्ला काटें।

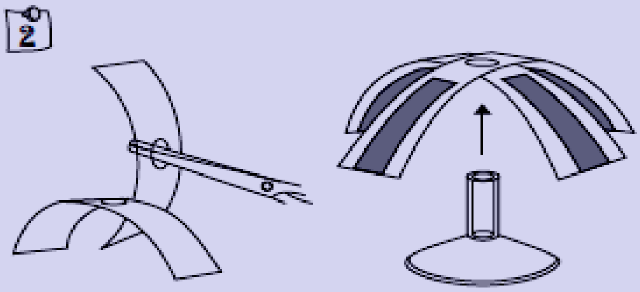

छल्ले को दो भाग में काटें और उनके बीच छेद करें। छेदों में सक्शन कप घुसाकर कीड़ा बनायें।

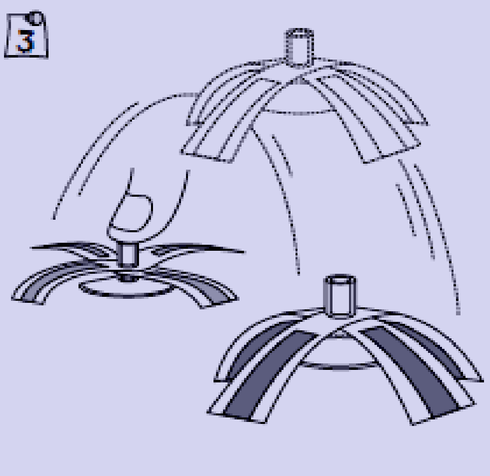

कीड़े को मेज पर रखें। फिर सक्शन कप को दबाकर उसे छोड़ें। पहले कीड़ा चपटा होगा और फिर ऊपर कूदेगा।

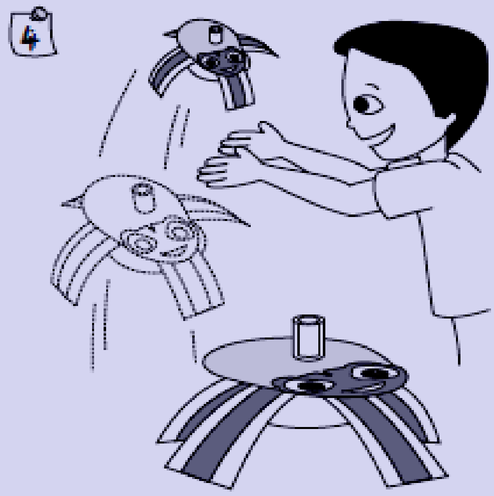

एक कार्डशीट का कीड़ा बनाकर उसे सक्शन कप में फिट करें। फिर कीड़े को बार-बार दबाकर उछालें और उसे पकड़ें।

संग्रहः शाश्वत बसु
आई0 एस0 ए0 – एस0सी0ई0आर0टी0

कविता

अब होंगे सब बच्चे पास
शुरू हुआ स्मार्ट क्लास

सजा-धजा सा कमरा होगा
और बिजली का पंखा होगा

टीवी पर आकर के टीचर
टॉपिक डील करेंगी बेहतर

नहीं किताब का झंझट होगा
सब टीवी पर फटफट होगा

बच्चे जितना भी देखेंगे
उतनी ही तारीफ़ करेंगे

डा जियाउर रहमान जाफरी
हाई स्कूल माफ़ी वाया- अस्थावां,
ज़िला- नालंदा, बिहार

आपके विचार

आपके अनुभव अमूल्य है। हम चाहते हैं कि आपसे सार्थक संवाद स्थापित हो। इस अंक में हम पुनः पिछले विषय ही आपके समक्ष रख रहे है। आपके विचार आलेख के रूप में अपेक्षित है।

1. शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे ?
2. कक्षा प्रबंधन और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

आप अपने संकुल, विद्यालय, बी0 आर0 सी0 में चर्चा भी कर सकते है। चर्चा का समेकन भी हमें प्रेषित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अपने समूह के अलावे हमें भी भेज सकते हैं।

Website: www.biharscert.in
e-Mail - esamvaad.scert@gmail.com WhatsApp – +91 9973462621

Implementation Support Agency for SCERT, Bihar

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना, बिहार - 800006